श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति,
राजस्थान का उद्‌बोधन

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के विभिन्न भवन–परिसरों के ऑनलाइन लोकार्पण समारोह

दिनांक 19 नवम्बर, 2020 **समय दोपहर :12.30 बजे**

स्थान : राजभवन, जयपुर

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के विभिन्न भवन–परिसरों के ऑनलाइन लोकार्पण समारोह में उपस्थित राजस्थान विधानसभा के माननीय अध्यक्ष डॉ.सी.पी.जोशी जी, राजस्थान के उच्च शिक्षा मंत्री माननीय श्री भंवर सिंह जी भाटी, विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अमेरिका सिंह जी, विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष, संकायाध्यक्ष, प्रशासनिक अधिकारी, कर्मचारीगण, अन्य अधिकारीगण और एल्यूमिनी तथा प्रिय विद्यार्थियों।

मुझे खुशी है कि आज विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा आयोग एवं स्थानीय निधि के सहयोग से उपयोगी निर्माण कार्यों के इस लोकार्पण का मैं साक्षी बन रहा हूं। यह जानना भी मेरे लिए प्रसन्नता का एक और कारण है कि विश्वविद्यालय निरन्तर अपनी आधारभूत संरचना में विकास एवं विस्तार कर रहा है।

उच्च शिक्षा के विस्तार में आधारभूत सुविधाओं का सुदृढ़ होना जरूरी है। आधारभूत संरचना यदि किसी शिक्षण संस्थान की बेहतर होती है तो वहां पढ़ने वाले विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता और दक्षता में भी तेजी से वृद्धि होती है।

मानव को उपयोगी संसाधन बनाने का महत्वपूर्ण कार्य शिक्षा के जरिए ही होता है। ऐस में यह जरूरी है कि जहां विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करे, वह स्थान भी अच्छा, खुला–खुला और वहां की इमारतें बेहतर हो।

यह जानना सुखद है कि विश्वविद्यालय में भूगोल भवन का पृथक से निर्माण किया गया है तथा भारत सरकार द्वारा रूसा के दूसरे चरण में 1.5 करोड की लागत से यहां जियोस्पेशियल स्कील डेवलपमेन्ट सेन्टर तथा उद्यमिता केन्द्र की स्थापना का कार्य भी प्रारम्भ हुआ है। मैं यह मानता हूं कि भूगोल स्थानों की भौगोलिक जानकारी मात्र से जुड़ा ज्ञान नहीं है बल्कि इसके जरिए हम स्थानों की संस्कृति से भी गहरे से अवगत होते हैं।

विज्ञान और संस्कृति के मेल से ही जीवन संपन्न होता है। इस दृष्टि से मेरे लिए यह जानना प्रसन्नतादायक है कि विश्वविद्यालय में बन रहा जियोस्पेशियल सेंटर भू–स्थानिक प्रोद्योगिकी का प्रदेश का एकमात्र केन्द्र होगा। इससे इस क्षेत्र में शिक्षण तथा शोध के अवसर तो बढेंगे ही, रोजगार मूलक व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का भी विस्तार हो सकेगा।

मैं समझता हूं, डिजिटल भारत और आत्मनिर्भर भारत की दिशा में यह प्रभावी कदम है।

आज का दिन इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि आपके विश्वविद्यालय में दृश्य कला भवन का भी लोकार्पण हुआ है। कलाएं व्यक्ति को संपन्न ही नहीं करती है बल्कि जीवन को बेहतर ढंग से देखने और समझने की गहरी समझ भी देती है। व्यक्तिगत मेरा यह भी मानना है कि शिक्षा में कलाओं के समावेश से गूढ़ से गूढ़ विषय भी सहज और रोचक ढंग से संप्रेषित हो जाता है। मुझे इस बात को जानकर भी बेहद प्रसन्नता है कि दृश्यकला भवन में एक आर्ट गैलेरी का भी निर्माण किया गया है।

राजस्थान कला की दृष्टि से संपन्न राज्य है। पारम्परिक मिनिएचर पेंटिंग, मेवाड़ स्कूल की कलाकृतियों के साथ ही राजस्थान की अन्य चित्रशैलियां कला की अनुपम धरोहर है। आर्ट गैलरी में पारम्परिक चित्रशैलियों के साथ ही सम–सामयिक कला का प्रदर्शन अच्छी पहल होगा। इससे विद्यार्थी व्यावहारिक रूप में कलाओं के निकट आएंगे।

मैं जहां का निवासी हूं वह काशी बाबा विश्वनाथ की नगरी तो है ही, कलाओं की भी धरती है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में भारत कला भवन में प्राचीन और आधुनिक भारतीय कलाकृतियों की विरल धरोहर संजोयी हुई है। वहां की कलादीर्घा में जाने का अर्थ है, चित्र और मूर्तिकला की हमारी समृद्ध विरासत से रू–ब–रू होना।

मैं उम्मीद करता हूं, सुखाड़िया विश्वविद्यालय में स्थापित दृश्यकला विभाग की यह कला प्रदर्शनी भी ऐसे ही राजस्थान की समृद्ध पारम्परिक और सामयिक चित्र और मूर्तिकला के साथ आधुनिक इन्स्टालेशन आर्ट की देश की बेहतरी कलादीर्घाओं में अपना स्थान बनाएगी। यहां के विद्यार्थियों की कलाकृतियां भविष्य के लिए देश की धरोहर बनेगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

शिक्षा का ध्येय है–व्यक्ति का सर्वांगीण विकास। इसीलिए हमारे यहां कहा गया है–'सा विद्या या विमुक्तये।' विद्या वही है जो व्यक्ति को सभी ओर से अज्ञान के बंधनों से मुक्त करें। परस्पर भेदभाव की खाई को समाप्त करने का कार्य भी शिक्षा के जरिए ही संभव होता है।

विकसित समाज के लिए यह जरूरी है कि पुरूष और महिलाएं दोनों समान रूप से शिक्षित हों। कहते हैं एक महिला यदि शिक्षित होती है तो वह पूरे परिवार को शिक्षित कर देती है। इसलिए महिला शिक्षा आज के समय की सबसे बड़ी जरूरत है। मुझे यह जानकर अच्छा लग रहा है कि महिला शिक्षा के लिए विश्वविद्यालय अपने स्तर पर महत्वपूर्ण प्रयास कर रहा है।

विश्वविद्यालय के कला महाविद्यालय में महिला शिक्षिकाओं के लिये सभी आवश्यक सुविधाओं सहित अलग से 'वुमैन फैकल्टी रूम' बनाने की पहल महत्वपूर्ण है। बाहर से आने वाले छात्र, अभिभावकों एवं विश्वविद्यालय के संकाय सदस्य–कर्मचारियों के सुविधा के लिये परिसर में अलग से कैफेटेरिया का निर्माण तथा परिसर में ही स्टेशनरी तथा अन्य सामग्री क्रय करने की सुविधाओं के निर्माण कार्यों से विद्यार्थियों को वृहद स्तर पर लाभ मिलेगा।

इसी तरह विश्वविद्यालय में आज स्वास्थ्य व खेलकूद आदि गतिविधियों के लिए स्पोर्ट्स बोर्ड की स्थानीय निधि से मल्टीजिम, राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के डे–नाईट टेनिस मैचों की जरूरत के हिसाब से लॉनटेनिस, दो सिन्थोटिक कोर्ट्स का भी लोकार्पण हुआ है।

स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन का वास होता है। इसके लिए जरूरी है कि शिक्षा के साथ–साथ खेलकूद के लिए भी शिक्षण संस्थाओं में पर्याप्त अवसर हों। इस दृष्टि से विश्वविद्यालय में यह जो खेलकूद गतिविधियों के विकास कार्य किए गए हैं, उनसे आने वाले समय में आपके यहां से प्रदेश को बेहतरी खिलाड़ी ही नहीं मिलेंगे बल्कि स्वस्थ तन–मन के ऐसे विद्यार्थी तैयार हो सकेंगे जो हर क्षेत्र में अपना अलग मुकाम बनाएंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

सुखाड़िया विश्वविद्यालय ने अल्प समय में ही शिक्षा क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनायी है। यह जानना मेरे लिए सुखद है कि विश्वविद्यालय ने वैश्विक प्रतिस्पर्द्धा को ध्यान में रखते हुए अपने यहां विश्व स्तर के शैक्षणिक परिसरों, प्रशासनिक और खेल–कूद परिसरों

तथा पुस्तकालय परिसरों के आधुनिकीकरण की ओर कदम बढ़ाए हैं।

उदयपुर झीलों की नगरी से देशभर में विख्यात है। यहां के आस–पास के स्थानों पर भी झीलें, नदियां और दूसरे जलस्त्रोतों की कमी नहीं है। इस दृष्टि से मेरा सुझाव है कि विश्वविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के तरणताल का भी निर्माण हो। ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले आदिवासी छात्र–छात्रों को इस तरणताल में यदि विधिवत रूप से तैराकी के गुर सिखायें जाये तो वह दिन भी दूर नही जब तैराकी में भी विश्वविद्यालय राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान कायम कर सकेगा।

उदयपुर के आस–पास का क्षेत्र जनजातीय समुदाय बाहुल्य है। आदिवासी समाज की परम्पराएं आधुनिक ज्ञान–विज्ञान के लिए आज भी प्रेरणा देने वाली हैं। मेरा यह भी सुझाव है कि विश्वविद्यालय आदिवासी क्षेत्रों की बोलियों, वहां की परम्पराओं और ज्ञान पर भी विशेष कार्य करते इस क्षेत्र में पृथक से एक शोध एवं अनुसंधान केन्द्र की स्थापना यहां करे। धरोहर संरक्षण की दिशा में यह महत्वपूर्ण पहल होगी।

मुझे यह जानकर संतोष है कि कोविड–19 महामारी की चुनौती का सामना करते हुए, सुरक्षा के मानकों की पालना करते हुए विश्वविद्यालय में परीक्षा कार्य सम्पन्न हुआ है और निरन्तर समय पर परिणाम जारी किये जा रहे हैं। डिजिटल माध्यम से शिक्षण कार्य भी सुचारू रूप से किया जा रहा है।

मेरा विश्वास है कि विश्वविद्यालय अपने अकादमिक और संरचनात्मक विकास के साथ भविष्य में प्रदेश एवं देश के उच्च शिक्षा जगत में अपना उच्च स्थान सुनिश्चित करेगा।

मैं आज लोकार्पित हुए भवन–परिसरों के लिए आप सभी को बधाई देते हुए भविष्य के विकास के लिए स्वस्तिकामना करता हूं। कुलपति प्रो. अमेरिका सिंह तथा उनके सभी शिक्षक साथियों, विश्वविद्यालय के अधिकारी, कर्मचारियों की मैं सराहना करता हूं कि वे निरन्तर विश्वविद्यालय की बेहतरी के लिए कार्य कर रहे हैं।

यह विश्वविद्यालय आधारभूत विकास की दृष्टि से ही नहीं बल्कि शिक्षण की गुणवत्ता की दृष्टि से भी देश ही नहीं विश्वभर में अपनी अलग पहचान और मुकाम बनाए, इसके लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

आपने इस अवसर पर मुझे स्मरण किया, आप सभी का हार्दिक आभार।

धन्यवाद। जय हिन्द।